त्रक तूं सारे सई कर, जोपे कर जोत्रा।
माल तूं बंध मूरडे करे, पई म छड हथां।।७।।

हे बहन! अपने तकले को सीधा कर, अदवान को कस के बांध, माल को मरोड़ कर गांठ लगा और पूनी हाथ से मत छोड़।

अरट फेर उतावरो, तन के डेई ता।
तूं तां गिनंदी सुहाग धणीयजो, तोजे संने हिन सुत्रा।।८।।

शरीर से जोर लगाकर चरखे को जल्दी घुमा। तब तू अपने बारीक सूत का (धनी के सुहाग का) सुख पाएगी।

कतण रेहेंदो अधविच, आए डींह मथां।
कतण वारयूं हलयूं, डिसे न तूं पासां।।९।।

कातना आधा बीच में ही छूट जाएगा। चलने के दिन आ गए हैं। कातने वाली चली गई। तू अपनी तरफ क्यों नहीं देखती?

हांणे जिन थिए बिसरी, कत तूं कोड मंझां।
सुहाग संदो सुत्रडो, संनो थींदो तो हथां।।१०।।

अब तू मत भूल और हिम्मत के साथ सूत कात। तू बारीक सूत कातेगी, तो तुझे सुहाग का सुख मिलेगा।

हांणे तूं म किज निद्रडी, निद्रडी डेरे दुहाग।
तूं तां जागी जोर करे रे, गिंन तूं वंजी रे सुहाग।।११।।

अब तू नींद में मत रह। नींद दुःख देगी। तू जोर लगाकर जाग और अपने सुहाग का सुख ले।

ही सुत्र घणो सुहामणो, मोघो थींदो जोर।
सुजाणी तूं सिपरी, जीव मथांई घोर।।१२।।

यह सूत बड़ा सुहावना है, और महंगा हो जाएगा। तू अपने धनी की पहचान कर और अपने जीव को कुर्बान कर दे।

गिंन स्याबासी जेडिऐं, कर कां एहेडी पर।
हांणे को थिए विसरी, जे तो पिरी सुजातां घर।।१३।।

कुछ ऐसा कर कि सखियों में शाबासी मिले। प्रीतम घर बुलाने के लिए आए हैं। तू क्यों भूलती है?

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ६६१ ।।

भोरी तूं म भूल इंद्रावती, हीं वेर एहेडी आय।
पिरी पांहिंजडो गिंनी करे, भोरी वीए तूं कां मसलाय।।१।।

हे इन्द्रावती! तू मत भूल। ऐसा धनी का समय पाकर तू अपना धनी ले और दूसरों से सलाह मत ले।

ही पिरी तोके कडे मिडंदा, गिन तूं सुजाणी सुहाग।
एहेडी एकांत तूं कडे लेहेनी, आए तोहेजडो लाग।।२।।

अपने प्रीतम को पहचान कर सुख ले। यह प्रीतम तुझे कब मिलेंगे? ऐसा एकान्त समय फिर कब मिलेगा? आज तुझे समय मिला है।

Nijanand App

हीं वेर घणूं सुहामणी, जा पिरिए डिंनी तोके पांण।
जगायाऊं जोर करे, सुहागणियन के सुलतांन।। ३ ।।

यह समय बड़ा लाभदायक है जो धनी ने तुझे दिया है। सुहागनियों के धनी जगा रहे हैं। वही धनी तुझे खुद जगा रहे हैं।

अंख उघाडे ढकजे, भोरी जिन चूके हितरी वेर।
रातो डींहा राजजो, सुत्र संनो कत सवा सेर।। ४ ।।

आंख खोलकर ढांपने में जितना समय लगता है, हे भोली बहन! इतना भी समय नष्ट न कर। रात-दिन धनी के नाम का सवा सेर (किलो) सूत कात।

नेणे सेनी नेह धर, मूंजे चस्मे से कतां।
सुत्र संनो हीं कती करे, मूंजी अंखिए भर अचां।। ५ ।।

नैनों से प्यार कर और निगाहों से कात। इस प्रकार बारीक सूत कात। उतना ही कात जितना मैं सोचती हूं।

भले सो कतंदी हीं सुत्रडो, अदी भले लधिम हीं वेर।
भले सो भगी हीं निद्रडी, मूंके भले धणी मिड्या हेर।। ६ ।।

भला सूत काता और समय भी तुझे अच्छा मिला। अच्छा हुआ जो तेरी नींद हट गई और यहां धनी भी अच्छी तरह से मिले।

धणी धारा हीं निद्रडी, व्यो ल्हाए ईं केर।
पिरी उतां जिंदुओ अदी, आऊं घोरे वंजां हिन वेर।। ७ ।।

धनी के बिना इस नींद से दूसरा कौन निकालेगा? ऐसे धनी पर इस समय मैं अपने जीव को कुर्बान करती हूं।

मूंनी कारण मूंजी अदियूं, पिरी डिंना हित पेर।
जिंनी पेरे आया अदियूं, आऊं घोरे वंजां हिन सेर।। ८ ।।

हे बहन! मेरे लिए प्रीतम यहां आए हैं। जिन पैरों से यहां आए हैं मैं उन पर कुर्बान जाती हूं।

अदी तूं धणी गिंनी बेठी मूहजो, बेओ न पसे कोय।
पस तूं गिंना धणी पांहिजो, अदी त तूं भाइज जोय।। ९ ।।

हे बहन! तू मेरे प्रीतम को लेकर बैठी है। दूसरा कोई नहीं देखता। तू अपने धनी को पहचान कर देख। तब तू सुहागन (सौभाग्यवती) कहलाएगी।

इंद्रावती चोए अदी मूंहजी, मूंके मिड्या मूजा पिरी।
जिंनी कोडे आऊं आवईं, से पूरण केआं उंनी।। १० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! मुझे मेरे प्रीतम मिल गए हैं। मैंने जो चाहना की थी, वह सब उन्होंने पूरी कर दी है।

Nijanand App

रतनबाई अदी मूंहजी, आऊं करियां आंसे गाल।
सुहाग मूके डिनाऊं घणों, अदी थेईस आऊं निहाल।। ११ ।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मैं तुमसे बातें करती हूं। मेरे धनी ने बहुत सुख दिया जिससे मैं निहाल (कृतकृत्य) हो गई।

मूं पर मंगई हिकडी, पिरी सुख डिंना घणी पर।
हिंनी सुखे संदियूं गालियूं, अदी कंदासी वंजी घर।। १२ ।।

मैंने धनी से एक मांग रखी थी, पर धनी ने कई तरह से सुख दिए। इन सुखों की बातें घर चलकर करूंगी।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६७३ ।।

श्री लखमीजीनूं द्रष्टांत

हूं जाणूं निध एकली लऊं, धणी तणां सुख सघला सहूं।
ए सुख बीजा कोणे नव दऊं, वली वली तमने स्या ने कहूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझे ऐसा लगता है कि धनी के सब सुखों को मैं अकेली ले लूं और यह सुख और किसी को न दूं। बार-बार मैं तुमको किसलिए कहूं?

ए वचन कांई एम न केहेवाय, जीव मारो मांहें दुखाय।
मूने घणूं विमासण थाय, पण जाक्यो मारो नव जकाय।। २ ।।

यह वचन ऐसे ही नहीं कहे जाते। मेरा जीव दुःखी होता है, परन्तु विचार करके देखती हूं तो यह रोकने से रुकता नहीं है।

धणी कहावे तो हूं कहूं, नहीं तो ए निध कांई एम न दऊं।
देतां मारो जीव निसरे, ए वचन कांई मूने न विसरे।। ३ ।।

धनी कहलाते हैं तो कहती हूं। नहीं तो, यह वस्तु ऐसे ही नहीं देना चाहती। यह वस्तु देने में मेरा जीव निकलता है। यह वचन मुझे भूलते नहीं हैं।

में लीधा कठणाई करी, श्री धणी तणे चरणे चित धरी।
हूं घणुंए राखूं अंतर, पण सागर पूर प्रगट करे घर।। ४ ।।

मैंने धनी के चरणों को चित्त में लगाकर बड़ी कठिनाई से ग्रहण किया है, बड़े तरीके से इन्हें रखना चाहती हूं, परन्तु सागर की लहरों समान यह सुख हमारे घर की बात प्रकट करते हैं।

धणी कहावे अंतरगत रही, कह्यानी सोभा कालबुतने थई।
नही तो ए वचन केम प्रगट थाय, केहेतां घणूं कालजु कपाय।। ५ ।।

धनी मेरे अन्दर बैठकर इन वचनों को कहला रहे हैं। मेरे तन को तो कहने की शोभा मिल रही है। नहीं तो, यह वचन ऐसे नहीं कहे जाते, कहने में मेरा कलेजा फटता है।

रखे जाणो वचन कह्या अचेत, केहेतां जीवे दुख दीठां अनेक।
ज्यारे जीवसूं विचारी जोयूं मन, जे आ हूं केहा कहूं छूं वचन।। ६ ।।

ऐसा भी नहीं समझना कि यह वचन मैं बेहोशी में कह रही हूं, क्योंकि इनके कहने में जीव को बहुत दुःख हुआ है। जीव और मन से विचार करके देखती हूं कि मैं यह कौन से वचन तुमको कह रही हूं।

Nijanand App